17/11/2025

देवताओं का कलह: एक पौराणिक कथा

प्रस्तावना

प्राचीन काल में जब पृथ्वी अभी नवीन थी और मनुष्यों ने अपनी सभ्यता की नींव रखी थी, उस समय देवताओं का एक विशाल **पंथियन** (pantheon) स्वर्गलोक में विराजमान था। ये देवता मानव जीवन के हर पहलू पर अपना प्रभाव रखते थे - युद्ध से लेकर प्रेम तक, ज्ञान से लेकर कृषि तक। परंतु जैसा कि हर शक्तिशाली समूह में होता है, देवताओं के बीच भी **कलह** (discord) की स्थितियाँ उत्पन्न होती रहती थीं। यह कहानी एक ऐसे ही महान संघर्ष की है, जिसने न केवल स्वर्ग को प्रभावित किया, बल्कि मानव जगत को भी अपनी चपेट में ले लिया।

देवताओं का संसार

स्वर्गलोक में सबसे प्रमुख देवता इंद्रदेव थे, जो शक्ति और न्याय के प्रतीक माने जाते थे। उनके साथ अन्य देवता भी थे - अग्निदेव, वायुदेव, वरुणदेव, और चंद्रदेव। प्रत्येक देवता की अपनी विशिष्ट शक्तियाँ और जिम्मेदारियाँ थीं। वे सभी मिलकर ब्रह्मांड के संचालन में योगदान देते थे।

परंतु इस दिव्य समूह में एक देवता ऐसा भी था जो अपनी **चतुराई** (cunning) के लिए विख्यात था - वह था मायादेव। मायादेव छल-कपट और रणनीति के स्वामी थे। उनकी बुद्धि इतनी तीव्र थी कि वे किसी भी परिस्थिति को अपने पक्ष में मोड़ सकते थे। हालांकि अन्य देवता उन्हें संदेह की दृष्टि से देखते थे, फिर भी उनकी कुशलता को नकारा नहीं जा सकता था।

कलह का बीजारोपण

एक दिन, स्वर्गलोक की महासभा में एक महत्वपूर्ण निर्णय लेना था। पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच एक भयंकर युद्ध छिड़ने वाला था, और देवताओं को तय करना था कि उन्हें इस युद्ध में **हस्तक्षेप** (intervened) करना चाहिए या नहीं। इंद्रदेव का मानना था कि देवताओं को मानवों के मामलों में सीधे हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, जबकि अग्निदेव का कहना था कि यदि वे हस्तक्षेप नहीं करेंगे तो हजारों निर्दोष लोगों की जानें जाएँगी।

मायादेव ने इस विवाद को एक अवसर के रूप में देखा। उन्होंने चुपके से दोनों पक्षों में **कलह** फैलाना शुरू कर दिया। वे इंद्रदेव के पास जाकर कहते कि अग्निदेव उनके अधिकार को चुनौती दे रहे हैं, और फिर अग्निदेव के पास जाकर कहते कि इंद्रदेव मानवों की पीड़ा की परवाह नहीं करते। धीरे-धीरे, देवताओं के बीच का मतभेद गहरा होता गया।

विभाजन का विस्तार

जैसे-जैसे समय बीतता गया, स्वर्गलोक दो गुटों में बँट गया। एक ओर इंद्रदेव के समर्थक थे जो मानते थे कि प्रत्येक प्राणी को अपने कर्मों का फल भोगना चाहिए और देवताओं को अनावश्यक हस्तक्षेप से बचना चाहिए। दूसरी ओर अग्निदेव के अनुयायी थे जो करुणा और सक्रिय सहायता में विश्वास रखते थे।

वायुदेव और वरुणदेव, जो पहले तटस्थ रहने की कोशिश कर रहे थे, अब विवश होकर पक्ष चुनने लगे। स्वर्गलोक का वातावरण तनावपूर्ण हो गया। देवताओं के बीच बातचीत बंद हो गई, और वे एक-दूसरे से कटने लगे। मायादेव इस सब को देखकर संतुष्ट थे, क्योंकि यह सब उनकी योजना का हिस्सा था।

चंद्रदेव का आगमन

इस अराजकता के बीच, चंद्रदेव, जो शांति और समझदारी के प्रतीक थे, ने स्थिति को समझने का प्रयास किया। उन्होंने देखा कि यह विवाद अचानक और अप्राकृतिक रूप से बढ़ा था। उन्हें संदेह हुआ कि कोई इस **कलह** को जानबूझकर बढ़ावा दे रहा है।

चंद्रदेव ने गुप्त रूप से जाँच-पड़ताल शुरू की। उन्होंने देखा कि मायादेव कैसे अलग-अलग देवताओं के पास जाकर गलतफहमियाँ फैला रहे थे। परंतु मायादेव इतने **चतुर** थे कि उन्होंने अपने कार्यों को इस तरह से किया कि कोई उन्हें सीधे आरोपित नहीं कर सकता था। वे हमेशा दूसरों के शब्दों को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत करते, और कभी भी सीधे झूठ नहीं बोलते थे।

चंद्रदेव जानते थे कि मायादेव को सीधे उजागर करना कठिन होगा। उन्हें एक योजना बनानी थी जो मायादेव की अपनी **चालाकी** का ही उपयोग करे।

चंद्रदेव की योजना

चंद्रदेव ने एक विशेष सभा का आयोजन किया, जिसमें सभी देवताओं को उपस्थित होना था। उन्होंने घोषणा की कि वे एक प्राचीन परंपरा का पालन करेंगे जिसमें प्रत्येक देवता को सत्य के वृक्ष के सामने खड़े होकर अपने विचार रखने होंगे। सत्य का वृक्ष एक दिव्य वृक्ष था जो झूठ बोलने वाले को तुरंत उजागर कर देता था।

मायादेव इस प्रस्ताव से घबरा गए, परंतु उन्हें यह भी पता था कि यदि वे इनकार करेंगे तो संदेह उन पर ही आएगा। उन्होंने सोचा कि वे अपनी **चतुराई** का उपयोग करके इस परीक्षा से भी बच निकलेंगे, क्योंकि उन्होंने कभी सीधे झूठ नहीं बोला था।

सत्य का प्रकटीकरण

जब सभा का दिन आया, सभी देवता एकत्रित हुए। एक-एक करके प्रत्येक देवता ने अपने विचार रखे। इंद्रदेव ने कहा कि उनका मानना है कि मानवों को अपने भाग्य का निर्माता स्वयं होना चाहिए। अग्निदेव ने कहा कि करुणा देवत्व का सार है और उन्हें निर्दोषों की रक्षा करनी चाहिए। सत्य का वृक्ष दोनों के लिए शांत रहा, क्योंकि दोनों अपने सच्चे विश्वास व्यक्त कर रहे थे।

जब मायादेव की बारी आई, चंद्रदेव ने एक सीधा प्रश्न पूछा: "क्या आपने कभी जानबूझकर देवताओं के बीच गलतफहमी फैलाई है?"

मायादेव ने सावधानी से उत्तर दिया: "मैंने केवल वही कहा है जो मुझे सुनाई दिया।" यह तकनीकी रूप से सत्य था, इसलिए वृक्ष चुप रहा।

परंतु चंद्रदेव ने दूसरा प्रश्न पूछा: "क्या आपने जानबूझकर शब्दों को इस तरह प्रस्तुत किया जिससे **कलह** उत्पन्न हो?"

इस बार मायादेव झिझक गए। यदि वे 'नहीं' कहते, तो यह झूठ होता। यदि वे 'हाँ' कहते, तो उनका षड्यंत्र उजागर हो जाता। उनकी चुप्पी ही उनका उत्तर थी।

सत्य का वृक्ष अचानक चमक उठा, और सभी देवताओं ने समझ लिया कि मायादेव ही उनके बीच **कलह** का कारण थे।

दंड और सुधार

देवताओं ने मायादेव को उनके कृत्य के लिए दंडित करने का निर्णय लिया। परंतु चंद्रदेव ने एक भिन्न सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि मायादेव की **चतुराई** एक महत्वपूर्ण गुण है, परंतु उसका उपयोग विनाशकारी उद्देश्यों के लिए नहीं, बल्कि रचनात्मक कार्यों के लिए होना चाहिए।

मायादेव को यह दायित्व दिया गया कि वे अपनी बुद्धि का उपयोग देवताओं और मानवों के बीच समस्याओं को सुलझाने में करें, न कि उन्हें बढ़ाने में। उन्हें वचन देना पड़ा कि वे कभी भी देवताओं के **पंथियन** में फूट नहीं डालेंगे।

मानव जगत में हस्तक्षेप

अब जब देवताओं के बीच मतभेद सुलझ गए थे, उन्हें मानव जगत के युद्ध के बारे में निर्णय लेना था। चंद्रदेव ने एक संतुलित मार्ग सुझाया: देवता सीधे **हस्तक्षेप** नहीं करेंगे, परंतु वे मनुष्यों को संकेत और मार्गदर्शन देंगे।

इंद्रदेव और अग्निदेव दोनों इस समझौते से सहमत हो गए। देवताओं ने मानव नेताओं के स्वप्नों में संदेश भेजे, उन्हें शांति के मार्ग की ओर प्रेरित किया। धीरे-धीरे, मानव नेताओं ने समझौता वार्ता शुरू की, और युद्ध टल गया।

अजेयता की वास्तविकता

इस पूरी घटना से देवताओं ने एक महत्वपूर्ण सबक सीखा: कोई भी पूर्णतः **अजेय** (invulnerable) नहीं है, चाहे वे कितने भी शक्तिशाली क्यों न हों। यहाँ तक कि देवता भी गलतफहमियों और भावनाओं के शिकार हो सकते हैं।

इंद्रदेव ने स्वीकार किया कि उनकी कठोरता कभी-कभी करुणा की कमी में बदल जाती है। अग्निदेव ने माना कि उनकी करुणा कभी-कभी व्यावहारिकता को भूल जाती है। और सबसे महत्वपूर्ण बात, मायादेव ने समझा कि **चतुराई** तभी मूल्यवान है जब उसका उपयोग सही उद्देश्यों के लिए हो।

एकता की पुनर्स्थापना

देवताओं के **पंथियन** में फिर से एकता स्थापित हुई। उन्होंने एक नियम बनाया कि भविष्य में यदि कभी उनके बीच मतभेद हो, तो वे तुरंत एक खुली सभा बुलाएँगे जहाँ सभी अपने विचार स्पष्ट रूप से रख सकें। गलतफहमियों को बढ़ने नहीं दिया जाएगा।

चंद्रदेव को उनकी बुद्धिमत्ता और धैर्य के लिए विशेष सम्मान दिया गया। उन्होंने न केवल मायादेव के षड्यंत्र को उजागर किया, बल्कि एक ऐसा समाधान भी प्रस्तुत किया जो सभी के लिए स्वीकार्य था।

मानव जगत पर प्रभाव

पृथ्वी पर मनुष्यों ने भी इस घटना से प्रेरणा ली। जब उनके नेताओं को देवताओं के संदेश मिले, उन्होंने समझा कि यदि देवता अपने मतभेद सुलझा सकते हैं, तो मनुष्य क्यों नहीं?

युद्ध जो अनिवार्य लग रहा था, वह शांति समझौते में बदल गया। दोनों पक्षों ने अपनी जिद छोड़ी और एक मध्य मार्ग खोजा। यह उस समय की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक थी।

निष्कर्ष: सामंजस्य का महत्व

यह कहानी हमें सिखाती है कि **कलह** चाहे देवताओं के बीच हो या मनुष्यों के बीच, यह विनाशकारी हो सकता है। परंतु यदि समझदारी, धैर्य, और खुले संवाद का उपयोग किया जाए, तो किसी भी संघर्ष को सुलझाया जा सकता है।

मायादेव की **चतुराई** ने दिखाया कि बुद्धि का दुरुपयोग कैसे समस्याओं को जन्म दे सकता है, परंतु उसी बुद्धि का सही उपयोग समाधान भी ला सकता है। चंद्रदेव के **हस्तक्षेप** ने संकट को अवसर में बदल दिया।

देवताओं के **पंथियन** में फिर से शांति और सामंजस्य स्थापित हुआ, और यह संदेश मानव जगत तक पहुँचा कि एकता में ही शक्ति है।

आज भी, जब हम अपने जीवन में मतभेदों का सामना करते हैं, तो हमें याद रखना चाहिए कि कोई भी **अजेय** नहीं है, और समझदारी से सभी समस्याओं का समाधान संभव है। यही इस प्राचीन कथा का कालजयी संदेश है।

विपरीत दृष्टिकोण: कलह की आवश्यकता

प्रस्तावना

हमने अभी एक कहानी पढ़ी जहाँ देवताओं के बीच **कलह** को एक नकारात्मक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया, और अंत में एकता और सामंजस्य की स्थापना को सर्वोत्तम परिणाम बताया गया। परंतु क्या यह दृष्टिकोण पूर्णतः सही है? क्या संघर्ष और मतभेद हमेशा हानिकारक होते हैं? आइए इस पारंपरिक सोच को चुनौती देते हुए एक विपरीत दृष्टिकोण प्रस्तुत करें।

कलह: प्रगति का इंजन

यदि हम ईमानदारी से विचार करें, तो पाएंगे कि मानव इतिहास में सबसे बड़ी प्रगति अक्सर संघर्ष और असहमति से ही हुई है। यदि देवताओं के **पंथियन** में कभी कोई मतभेद नहीं होता, यदि सभी हमेशा एक राय रखते, तो क्या विकास संभव होता? शायद नहीं।

इंद्रदेव और अग्निदेव के बीच का विवाद - मानवों के मामलों में **हस्तक्षेप** करना या नहीं - वास्तव में एक महत्वपूर्ण दार्शनिक प्रश्न था। इंद्रदेव स्वायत्तता और व्यक्तिगत जिम्मेदारी में विश्वास करते थे, जबकि अग्निदेव करुणा और सक्रिय सहायता के पक्षधर थे। दोनों दृष्टिकोण मूल्यवान थे, और यह **कलह** दोनों पक्षों को अपने विचारों को परिष्कृत करने का अवसर दे रहा था।

यदि चंद्रदेव ने "शीघ्र" इस विवाद को सुलझा दिया, तो शायद देवता इन गहरे दार्शनिक प्रश्नों पर पर्याप्त चिंतन नहीं कर पाते। कभी-कभी असहमति हमें गहराई से सोचने के लिए मजबूर करती है।

मायादेव: खलनायक या आवश्यक उत्प्रेरक?

कहानी में मायादेव को खलनायक के रूप में प्रस्तुत किया गया - एक **चतुर** छलिया जो जानबूझकर देवताओं के बीच गलतफहमियाँ फैलाता है। परंतु क्या हम इसे दूसरे नजरिए से देख सकते हैं?

मायादेव ने वास्तव में क्या किया? उन्होंने केवल उन मतभेदों को सतह पर ला दिया जो पहले से ही मौजूद थे। यदि इंद्रदेव और अग्निदेव के बीच वास्तविक असहमति नहीं होती, तो मायादेव की **चालाकी** कभी सफल नहीं होती। उन्होंने तो बस उस दबी हुई असहमति को उजागर किया जो अन्यथा धीमी आग की तरह सुलगती रहती।

कुछ मनोवैज्ञानिक तर्क देते हैं कि दबी हुई भावनाएँ और अव्यक्त संघर्ष खुले विवाद से अधिक खतरनाक होते हैं। मायादेव ने, अपनी **चतुराई** से, देवताओं को एक ऐसी स्थिति में ला दिया जहाँ उन्हें अपनी असली भावनाओं का सामना करना पड़ा। यह दर्दनाक था, परंतु शायद आवश्यक भी।

"अजेयता" का भ्रम

कहानी में यह संदेश दिया गया कि कोई भी पूर्णतः **अजेय** नहीं है, यहाँ तक कि देवता भी नहीं। यह सही है, परंतु इसका निहितार्थ क्या है?

यदि हम सभी कमजोर हैं, तो क्या हमें निरंतर सतर्क रहने की आवश्यकता नहीं है? क्या संघर्ष और चुनौतियाँ ही हमें मजबूत बनाती हैं? एक देवता जो कभी भी अपनी मान्यताओं पर सवाल नहीं उठाता, जो कभी भी विरोध का सामना नहीं करता, वह धीरे-धीरे कमजोर हो जाएगा।

शारीरिक व्यायाम के बारे में सोचें: मांसपेशियाँ तभी मजबूत होती हैं जब उन्हें चुनौती दी जाए। मानसिक और बौद्धिक विकास भी इसी सिद्धांत पर काम करता है। **कलह** और संघर्ष हमारे विचारों की मांसपेशियों को मजबूत बनाते हैं।

एकमत का खतरा

कहानी का सुखद अंत है जहाँ सभी देवता एक समझौते पर पहुँचते हैं और एकता स्थापित होती है। यह सुंदर लगता है, परंतु क्या यह वास्तव में वांछनीय है?

इतिहास हमें बताता है कि जब भी किसी समूह में पूर्ण एकमत होता है, तो यह खतरनाक हो सकता है। विविधता - विचारों की, दृष्टिकोणों की - ही किसी समाज को जीवंत और अनुकूलनशील बनाती है। यदि देवताओं के **पंथियन** में सभी एक ही राय रखें, तो वे नई परिस्थितियों के अनुकूल कैसे होंगे?

असहमति का अधिकार, विरोध करने की स्वतंत्रता, ये लोकतंत्र के मूल स्तंभ हैं। यदि हम हमेशा "सामंजस्य" और "एकता" की खोज में रहें, तो क्या हम महत्वपूर्ण असहमतियों को दबा नहीं रहे हैं?

रचनात्मक कलह बनाम विनाशकारी कलह

शायद समस्या **कलह** में नहीं, बल्कि उसके प्रकार में है। रचनात्मक असहमति जो बौद्धिक विकास को बढ़ावा देती है, वह विनाशकारी संघर्ष से भिन्न है जो केवल अहंकार और घृणा को बढ़ाता है।

मायादेव की गलती यह नहीं थी कि उन्होंने मतभेदों को उजागर किया, बल्कि यह थी कि उन्होंने इसे गुप्त रूप से और व्यक्तिगत लाभ के लिए किया। यदि वे खुले रूप से इन मुद्दों को सामने लाते और एक स्वस्थ बहस को प्रोत्साहित करते, तो शायद परिणाम और भी बेहतर होते।

हस्तक्षेप का प्रश्न पुनः

अंततः, देवताओं ने "संतुलित" दृष्टिकोण अपनाया - सीधे **हस्तक्षेप** नहीं, परंतु मार्गदर्शन देना। यह राजनयिक समाधान है, परंतु क्या यह सर्वोत्तम है?

कभी-कभी निर्णायक कार्रवाई की आवश्यकता होती है। यदि हजारों निर्दोष लोग मरने वाले हैं, तो क्या "मार्गदर्शन" देना पर्याप्त है? क्या यह केवल जिम्मेदारी से बचने का एक तरीका नहीं है?

शायद अग्निदेव का मूल दृष्टिकोण अधिक साहसी और नैतिक रूप से स्पष्ट था। कभी-कभी समझौता कमजोरी का प्रतीक हो सकता है, न कि बुद्धिमत्ता का।

निष्कर्ष: संघर्ष को स्वीकार करना

इस विपरीत दृष्टिकोण का उद्देश्य यह नहीं है कि हम **कलह** और विवाद को महिमामंडित करें, बल्कि यह स्वीकार करें कि वे जीवन का एक आवश्यक और संभवतः लाभदायक हिस्सा हैं।

संघर्ष हमें बढ़ने का अवसर देता है। असहमति हमारे विचारों को परिष्कृत करती है। मतभेद हमें नई संभावनाओं की खोज के लिए प्रेरित करते हैं।

मायादेव की **चतुराई**, यदि सही दिशा में उपयोग की जाए, एक शक्तिशाली उपकरण हो सकती है। इंद्रदेव और अग्निदेव के बीच का विवाद, यदि खुले रूप से संभाला जाए, दोनों पक्षों को बेहतर बना सकता था।

शायद हमें "सामंजस्य" के आदर्श की अंधी खोज छोड़कर, स्वस्थ असहमति की संस्कृति को अपनाना चाहिए। एक ऐसा **पंथियन** या समाज जहाँ विविध विचार सम्मानित हों, जहाँ बहस को प्रोत्साहन मिले, वह एकमत की नीरसता से कहीं अधिक जीवंत और शक्तिशाली होगा।

अंततः, यह प्रश्न पूछना महत्वपूर्ण है: क्या हम वास्तव में एक ऐसे स्वर्गलोक में रहना चाहेंगे जहाँ सभी हमेशा सहमत हों? या हम उस विविधता और संघर्ष को महत्व देते हैं जो जीवन को दिलचस्प और सार्थक बनाती है?